खलाई पौधो से बात करती है

Ursula Nafula
Jesse Pietersen
Tanvi Sirari
Hindi
Level 2

(imageless edition)

ये खलाई है। ये सात साल की है। इसकी भाषा लुबुकुसु में इसके नाम का मतलब है, “एक अच्छी इंसान”।

खलाई जाग कर संतरे के पेड़ से बात करती है।
“कृपया खूब बढ़ो अौर हमे बहुत सारे पके संतरे दे दो।”

खलाई विद्यालय चलकर जाती है। रास्ते में वो घास से बात करती है। “कृपया घास, हरी-भरी हो जाना अौर सूखना मत।”

खलाई जंगली फूलो के पास से गुजरती है।
“कृपया फूलो खिलते रहना ताकि मै तुम्हे अपने बालो में लगा सकूँ।”

विद्यालय में, खलाई आँगन के बीच में लगे पेड़ से बात करती है।”कृपया पेड़, अपनी शाखाअो को बड़ी करो ताकि हम तुम्हारी छाया के नीचे पढ़ सके।”

खलाई अपने विद्यालय के चारो ओर लगी बाड़ से बात करती है। “कृपया ताकतवर बनो और बुरे लोगो को अँदर अाने से रोको।”

जब खलाई विद्यालय से वापस घर आयी, तब वो संतरे के पेड़ से मिली। “क्या तुम्हारे संतरे पक गये है?” खलाई ने पूछा।

“संतरे अभी भी हरे है,” खलाई ने आह भरते हुए कहा। “मैं तुमसे कल मिलूँगी संतरे के पेड़,” खलाई बोली। “शायद तब तुम्हरे पास मेरे लिये एक पका संतरा होगा!”

Storybooks Canada

storybookscanada.ca

खलाई पौधो से बात करती है

Written by: Ursula Nafula
Illustrated by: Jesse Pietersen
Translated by: Tanvi Sirari

This story originates from the African Storybook (africanstorybook.org) and is brought to you by Storybooks Canada in an effort to provide children's stories in Canada's many languages.

This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.